(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ २४ का शेष...)

(पृष्ठ 23 का शेष ...) का ज्ञान भी सच्चा नहीं। निश्चय आदरणीय है तथा व्यवहारनय जानने योग्य है। वर्तमान पर्याय में विभाव का ज्ञान करके, शुद्धस्वभाव में विभाव के अभाव का निश्चय करके, राग का लक्ष्य छोड़कर स्वभाव की ओर झुकाव करना ही सम्यग्दर्शन का कारण है।

शुद्धजीव में प्रशश्त अथवा अप्रशस्त - समस्त मोह-राग-द्वेष का अभाव है।

''शुद्ध जीवास्तिकाय के प्रशस्त अथवा अप्रशस्त मोह-राग-द्वेष का अभाव होने से मान-अपमान के हेतुभूत कर्मोदय के स्थान नहीं हैं।''

चैतन्यस्वभाव एकरूप शुद्ध है, उसमें भले-बुरे राग-द्वेष का अभाव है। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति मोह तथा राग वह प्रशस्त है, और देव-गुरु के प्रति कोई विरोधभाव करता हो उसके प्रति द्वेष हो वह प्रशस्त द्वेष है। स्त्री, कुटुम्ब, दुकान के प्रति मोह तथा राग अप्रशस्त है और स्त्री, कुटुम्ब से प्रतिकूल जीवों के प्रति द्वेष वह अप्रशस्त द्वेष है। संसारी जीव की पर्याय में एकसमय जितना मोह-राग-द्वेष का परिणाम है, किन्तु स्वभावदृष्टि से देखा जाय तो शुद्धस्वभाव में उनका अभाव है। जिस भाव से तीर्थंकर पुण्य-प्रकृति बँधती है, उस भाव का भी शुद्धस्वभाव में अभाव है। स्वभाव में मोह-राग-द्वेष का अभाव है, इसलिए मान-अपमान के हेतुभूत कर्मोदय के स्थान नहीं हैं। जिससमय मान-अपमान की पर्याय है, उसीसमय त्रिकाल शुद्धस्वभाव मान-अपमान रहित पड़ा हुआ है। अतः अन्तर्मुख रुचि करके अपने शुद्धात्मा की दृढ़ता ऐसी कर कि जिससे दूसरी वस्तु का तुझे अभिमान न हो। यहाँ पुण्य-पाप का अभिमान छोड़कर स्वभाव की रुचि कराते हैं।

त्रिकालीस्वभाव का ज्ञान करे तो पर्याय का ज्ञान सच्चा है और तभी ज्ञान प्रमाण होता है।

ज्ञान जैसे को तैसा जानता है। मिथ्याज्ञान में शान्ति नहीं है। कर्म, कर्म में और निमित्त, निमित्त में है। चारित्र की पर्याय में दोष एकसमय जितना है, किन्तु त्रिकाली स्वभाव में दोष नहीं है। त्रिकालीस्वभाव सामान्य और पर्याय विशेष हैं। सामान्यस्वभाव राग-द्वेष रहित है ऐसा ज्ञान करे तो विशेष का अर्थात् पर्याय का ज्ञान यथार्थ है और अभी ज्ञान प्रमाण होता है। त्रिकालीस्वभाव के ज्ञान बिना अकेली पर्याय का ज्ञान सच्चा नहीं है अर्थात् उसका एक भी ज्ञान सच्चा नहीं है। समय-समय में रुचि का परिणमन होता रहता है; उस रुचि को यदि यथार्थ बनाना हो तो त्रिकाली शुद्धस्वभाव की रुचि कर। त्रिकाली शुद्धस्वभाव की रुचि और ज्ञान करने पर पर्याय का ज्ञान सच्चा होता है। **(क्रमशः)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 324 अंक : 12

हम लागे आतमराम सौं...

हम लागे आतमराम सौं ।। टेक।।
विनाशीक पुदगल की छाया, कौन रमे धन-धाम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।। 1।।
समता सुख घट में परकास्यो, कौन काज है काम सौं।
दुविधा भाव जलांजुलि दीनों, मेल भयौ निजस्वामि सौं।।
हम लागे आतमराम ...।। 2।।
भेदज्ञान करि निज-पर देख्यो, कौन विलोके चाम सौं।।
उरे-परे की बात न भावे, लौ लाई गुण-ग्राम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।। 3।।
विकलप भाव रंक सब भाजे, झरि चेतन अभिराम सौं।।
'द्यानत' आतम अनुभव करके, छूटे भवदु:ख-धाम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।। 4।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

गृहीत-मिथ्याचारित्र का स्वरूप और उसके त्याग का उपदेश

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह धरि करन विविध-विध देहदाह।
आतम-अनात्म के ज्ञानहीन जे-जे करनी तनकरन छीन ।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

जीव को मिथ्याश्रद्धा-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र दु:ख का कारण है; अत: यहाँ उसके त्याग की चर्चा चल रही है। जिन्हें आत्मा अनात्मा का भेदज्ञान नहीं है, जिनमें ख्याति-लाभ-पूजादि की चाहना है, जो विविध प्रकार के देहदाहरूप है - शरीर को कष्ट अथवा पीड़ा करनेरूप या क्षीण करनेरूप हैं, अज्ञानी को ऐसी सब क्रियाएँ मिथ्याचारित्र हैं, ऐसा पहचानकर उसका त्याग करो और आत्महित के मार्ग में लगो।

यहाँ अन्य मत में जो मिथ्याक्रियाएँ होती हैं उनकी यह बात है। अज्ञानी ने द्रव्यलिंगी जैनसाधु होकर जो पंचमहाव्रतादि शुभक्रिया की - वह तो अगृहीत मिथ्याचारित्र में समाविष्ट हुई; यहाँ गृहीत की बात चल रही है। सच्चे देव-गुरु की जिसको पहचान नहीं है और जो कुधर्म का सेवन करता है उसकी क्रियाओं में ख्याति-प्रसिद्धि की भावना रहती ही है, क्योंकि अन्दर में चैतन्य की प्रसिद्धि तो हुई नहीं, अतः किसी न किसी प्रकार से बाह्य में प्रसिद्धि चाहता है। धर्मात्मा तो जानते हैं कि हमारा काम हमारे अन्तर में हो ही रहा है, तब फिर जगत् में प्रसिद्धि का काम ही क्या है? हमारे अनुभव को जगत् के लोग जाने या न जाने, उससे हमारे अन्तर के अनुभव का कोई सम्बन्ध नहीं है।

अज्ञानी को अन्तर में कषायों को क्षीण करना तो आता नहीं अतः बाह्य में देह की क्षीणता को अथवा देह के कष्ट को वह चारित्र समझता है। देह की क्रिया तो अजीव है, और चारित्र तो जीव की क्रिया है - ऐसे जीव-अजीव की भिन्नता का जिसको भान नहीं है उसको कभी सच्चा चारित्र नहीं होता; वह भले ही देह को सुखा दे तो भी धर्म का किंचित् लाभ नहीं होगा। अज्ञानी कुदेवादि को मानता हुआ कदाचित् राग की

थोड़ी सी मंदता करके शुभभाव करे, उसमें देह की भले कृशता हो; परन्तु कषाय की कृशता नहीं होती, कषायों की तो गृहीत मिथ्यात्व के कारण से पुष्टि होती है। कषायों से भिन्न शांतस्वरूप आत्मा को जाने बिना कषायें क्षीण नहीं होतीं। - उसके तप सो कुतप हैं' उसकी क्रियाएँ गृहीत मिथ्याचारित्र हैं; - ऐसा जानकर अपने में यदि ऐसा भाव हो तो उसे छोड़ देना चाहिए।

भेदज्ञान के बिना चारित्र नहीं होता। स्व-पर का भेदज्ञान करके उसकी तीव्र भावनापूर्वक स्व में स्थिर होने से चारित्र होता है। नियमसार गाथा ८२ में कहते हैं कि - जीव और कर्म की भिन्नता जानकर, उसके भेद के अभ्यास से जीव को मध्यस्थता होती है और इससे उसको चारित्र होता है। गाथा १०६ में भी कहते हैं कि जो जीव सदैव जीव और कर्म के भेद का अभ्यास करता है वही 'पचक्खाण' को धारण करने में समर्थ होता है। इसप्रकार भेदज्ञान का अभ्यास ही चारित्र का मूल है।

ज्ञान-आनन्दस्वरूप सो आत्मा; और शरीर तथा रागादि अनात्मा; उनकी भिन्नता जो नहीं पहचानता उसको आत्मा की प्रसिद्धि (प्रगट स्वानुभूति) तो होती नहीं और लौकिक प्रसिद्धि के लिये वह तप वगैरह करता है; देह को क्षीण कर डालूं तो मेरा कल्याण हो जायगा - ऐसा वह देह की एकत्वबुद्धि से मानता है और इसलिए देह को पीड़ा उपजाने को अनेक प्रकार की मिथ्या क्रिया वह करता है, परन्तु वह यह नहीं जानता कि आत्मा में से कषाय कैसे छूटे, अतः उसकी सब क्रिया अज्ञान से भरी है, वे आत्मा को लाभ करनेवाली नहीं हैं, उनको तो 'मोक्ष की कतरनी' कही है; उन क्रियाओं में आत्मा की शांति नहीं है, परन्तु देह की दाह है; भीतर में कषाय की दाह है और बाह्य में देह की दाह है। भाई! चैतन्य की शांति के अनुभव बिना कषाय-अग्नि का दाह कैसे मिटेगा ? जिसको अपने अन्तर में अकषायी शांति का वेदन नहीं उसके अन्दर में कषाय की आकुलता ही भरी है।

जिससे आत्मा की वीतरागता पुष्ट हो, आनंद की वृद्धि हो और कषायें क्षीण हो उसको चारित्र कहते हैं; यह चारित्र आत्मा की दशा में रहता है, देह की क्रिया में या दिगम्बर शरीर में आत्मा का चारित्र नहीं रहता। हाँ, मुनिपनारूप चारित्र दशा के समय यद्यपि शरीर दिगम्बर ही रहता है, परन्तु चारित्र कहीं उस शरीर में नहीं रहता, चारित्र तो आत्मा में ही रहता है। आत्मस्वरूप में चरना, एकाग्र रहना सो चारित्र है; परन्तु देह से भिन्न आत्मा का जिसको ज्ञान नहीं है, कौनसी क्रिया देह की और

कौनसी क्रिया आत्मा की, इसका जिसको विवेक नहीं है, उसको चारित्र कैसा? देह से भिन्न आत्मा को जाना ही नहीं तब वह चरेगा किसमें? - एकाग्र होगा किसमें? कदाचित् वह शुभराग करे, परन्तु वह तो धर्म नहीं है, चारित्र नहीं है; धर्म और चारित्र तो देह से भिन्न अपने चैतन्य की श्रद्धा करके उसमें स्थित रहना है। ऐसा चारित्र मोक्ष का कारण है। उसके बिना जीव चाहे जितना कायक्लेश करे तो भी आत्मा की पुष्टि उसमें नहीं है; देह की क्षीणता होना सो मेरी क्रिया है - ऐसी मिथ्या जड़बुद्धि से तो आत्मा के गुणों की दशा क्षीण होती है, कषायें क्षीण नहीं होती। देह की क्षीणता से आत्मा को क्या लाभ?

शुद्ध आत्मा में चैतन्य का प्रतपन (विशेष शुद्धता) सो तप है। शुभराग का विकल्प जिससे बाह्य है - अनात्मा है, ऐसे आत्मस्वरूप के भान बिना तप कैसा? तप में तो अन्तर के शांत अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव है। अतीन्द्रिय आनन्द के स्वाद में लीनता होने पर आहारादि की वृत्ति ही न हो, उसका नाम उपवास तप है। ऐसी शुद्धता के अनुभव के बिना अकेला रागरूप बाह्यतप करके अज्ञानी नववें ग्रैवेयक तक जा चुका उस समय उसको गृहीत मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का तो त्याग था, क्योंकि उसके त्याग के बिना ग्रैवेयक में नहीं जा सकते। जो वस्त्र सहित साधुदशा मानता हो उसके तो मिथ्याचारित्र है, वह तो ग्रैवेयक में नहीं जा सकता; अनेक प्रकार के गृहीत-मिथ्यात्वादि को छोड़कर, दिगम्बर साधु होकर, पंचमहाव्रतादि का पालन कर नववें ग्रैवेयक तक गया तो भी आत्मा के अनुभव के बिना जीव का संसार-भ्रमण न मिटा और मोक्षमार्ग न हुआ; क्योंकि उसने अगृहीतमिथ्यात्वादि का त्याग न किया और शुभराग के वेदन को चारित्र समझकर उसी के वेदन में रुका रहा, राग से भिन्न आत्मा का वेदन उसने न किया।

सम्यग्ज्ञान सहित वीतरागता में ही सच्चा 'ज्ञान-तप' (चैतन्य-प्रतपन) है; इसके बिना देहबुद्धिपूर्वक जो कुछ किया जाय वह सब 'बालतप' (अज्ञान तप) है, उससे धर्म का कोई लाभ नहीं, परन्तु उसको धर्म मानने में मिथ्यात्वरूप बड़ा नुकसान है। अहा! चारित्रदशा तो जगत्पूज्य, महान आनन्दरूप है, उसमें क्लेश कैसा? मोक्षमार्ग का चारित्र कैसा होता है - उसकी भी बहुत लोगों को खबर नहीं है; इस समय में तो ऐसे चारित्रवंत साधु के दर्शन भी दुर्लभ हैं। चारित्र तो उत्तमसंवर-निर्जरा है; चारित्र के धारी मुनिराज तो सिद्धप्रभु के पड़ौसी हैं। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

जीव के विभावस्वभाव नहीं है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 39 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा।।३९।।

(हरिगीत)

अरे विभाव स्वभाव हर्षाहर्ष मानपमान के।
स्थान आतम में नहीं ये वचन हैं भगवान के।।३९।।

जीव को वास्तव में स्वभावस्थान (विभावस्वभाव स्थान) नहीं हैं, मानापमान भाव के स्थान नहीं हैं, हर्षभाव के स्थान नहीं हैं या अहर्ष के स्थान नहीं हैं।

यह, निर्विकल्प तत्त्व के स्वरूप का कथन है।

त्रिकाल-निरुपाधि जिसका स्वरूप है ऐसे शुद्ध जीवास्तिकाय को वास्तव में विभावस्वभावस्थान (-विभावरूप स्वभाव के स्थान) नहीं हैं; (शुद्ध जीवास्तिकाय को) प्रशस्त या अप्रशस्त समस्त मोह-राग-द्वेष का अभाव होने से मान-अपमान के हेतुभूत कर्मोदय के स्थान नहीं है; (शुद्ध जीवास्तिकाय को) शुभ परिणति का अभाव होने से शुभ कर्म नहीं है, शुभ कर्म का अभाव होने से संसारसुख नहीं है, संसारसुख का अभाव होने से हर्षस्थान नहीं हैं; और (शुद्ध जीवास्तिकाय को) अशुभ परिणति का अभाव होने से अशुभ कर्म नहीं है, अशुभ कर्म का अभाव होने से दु:ख नहीं है, दु:ख का अभाव होने से अहर्षस्थान नहीं हैं।

द्रव्यदृष्टि से निरुपाधिरूप शुद्धजीव में विभावस्थान नहीं है। यह अभेद निर्विकल्पतत्त्व के स्वरूप का कथन है। त्रिकाल निरुपाधि स्वरूप शुद्ध जीवास्तिकाय को वास्तव में विभावस्वभाव स्थान नहीं है (विभावरूप स्वभाव के स्थान नहीं है)।

शुद्धजीव का स्वरूप बतलाते हैं-

शुद्धजीव, निरुपाधिस्वभाव, परमपारिणामिकभाव, कारणपरमात्मा, द्रव्य स्वभाव, शुद्धचैतन्य ध्रुवस्वभाव - यह सब एकार्थ वाचक हैं। जीव के शद्धस्वरूप

में राग-द्वेषादि की उपाधि नहीं है, वह तीनों काल निरुपाधिस्वभाव वाला है।

जीवास्तिकाय का अर्थ है-असंख्यप्रदेशी कायवान जीव नामक पदार्थ। ऐसे असंख्यप्रदेशी जीव अनन्त हैं। निगोद से लेकर सिद्धपर्यन्त प्रत्येक जीव एकरूप शुद्ध हैं, उस शुद्धजीव के वास्तव में विभाव नहीं है। आत्मा का लक्ष चूककर पर्याय में विभाव होता अवश्य है, तथापि 'पर्याय में विभाव बिल्कुल नहीं है अथवा विभाव कर्मोदय के कारण है' - यह मानना खोटी बात है। जीव अपने अपराध से अपनी पर्याय में विभाव करता है।

यहाँ विभाव को स्वभाव कहने का कारण यह है कि जीव स्वतंत्ररूप से पर्याय में विभाव करता है; उस समय की पर्याय का वह स्वभाव है - ऐसा बतलाने के लिए उसे स्वभाव कहा है। यदि शुद्धस्वभावदृष्टि से देखा जावे तो शुद्धस्वभाव में विभाव का अभाव है। शुद्धस्वभाव में विभाव प्रविष्ट हो तो त्रिकालीस्वभाव ही विभावरूप हो जाय और शुद्ध होने का कभी अवसर ही प्राप्त न हो। विभाव व्यवहार है, उसे गौण करके अभूतार्थ कहकर स्वभाव में उसका अभाव बतलाकर स्वभाव का आदर करने के लिए कहा गया है।

वस्तुस्वभाव के नियम परिवर्तित नहीं होते, अतः तू अपनी बुद्धि में ही परिवर्तन कर ! पर्यायबुद्धि छोड़कर स्वभावबुद्धि कर !

अज्ञानीजीव निमित्तों को, संयोगों को तथा राग को फेरना चाहता है। किन्तु तू फेरेगा किसे? किसी के प्रवाह को रोकने की शक्ति तुझमें है ही नहीं। जिस समय जो निमित्त आनेवाला है, वह अपने स्वकाल में आवेगा ही। पुण्य के काल में पुण्य का भाव, पाप के काल में पाप का भाव, पर्याय के का में पर्याय - इसप्रकार प्रवाहक्रम चलता रहता है, उसमें कोई जीव फेर-फार नहीं कर सकता। निमित्त इत्यादि तो पर हैं, और जिस समय जो राग उत्पन्न हुआ उसका उसीसमय में व्यय कर सकते नहीं; अतः उसे फेरने की जो तेरी दृष्टि है - वह अज्ञानभाव है। तू तो अपनी दृष्टि को ही बदल, क्योंकि वस्तुस्वभाव के नियम को तू बदल ही नहीं सकता। निमित्त, संयोग, कर्म, विकार अथवा क्षायोपशमिक पर्याय के ऊपर की रुचि छोड़ और एकरूप अभेद शुद्धस्वभाव की रुचि कर, क्योंकि वही एक आदरणीय है। संसारदशा में विभाव होता है उसको व्यवहारनय जानती भी है, किन्तु वह आदरणीय नहीं है। शुद्धस्वभाव विभावरहित है ऐसा निश्चयनय जानता है। इसप्रकार अपने शुद्धस्वभाव को यथार्थ जाने तो व्यवहार का ज्ञान सच्चा किया जाय अन्यथा व्यवहार (शेष पृष्ठ - 4 पर...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पर्याय के भेद जानने में तो आते हैं न ?

उत्तर : पर्याय का यथायोग्य ज्ञान करना तो ठीक है, परन्तु जो शुद्ध अखण्ड अभेद आत्मा को पर्याय के भेदरूप मानता है, उसे कुबुद्धि कहा है।

प्रश्न : पर्याय को द्रव्य से कथंचित् अभिन्न कहा है न ?

उत्तर : सम्पूर्ण द्रव्य को प्रमाणज्ञान से देखने पर पर्याय कथंचित् भिन्न है और कथंचित् अभिन्न है-ऐसा कहा जाता है, परन्तु शुद्धनय के विषयभूत त्रिकाली ध्रुव की अपेक्षा से देखने पर वास्तव में द्रव्य से पर्याय भिन्न ही है, पर्यायार्थिकनय से देखने पर पर्याय द्रव्य से अभिन्न है। प्रयोजन की सिद्धि के लिए तो पर्याय को गौण करके, अविद्यमान ही मानकर, त्रिकाली ध्रुवस्वभाव को मुख्य करके भूतार्थ का आश्रय कराया है।

प्रमत्त पर्याय परद्रव्य के निमित्त से मलिन होती है- ऐसा तो कहा ही है, परन्तु अप्रमत्त पर्याय को भी परद्रव्य के संयोगजनित कह दिया है। औदयिकादि चार भावों को आवरणयुक्त कहा है। केवलज्ञान की क्षायिक पर्याय भी कर्मकृत (पंचास्तिकाय में) कही है, क्योंकि उसमें कर्म के अभाव की अपेक्षा आती है। चार भाव ज्ञायकस्वभाव में नहीं हैं, कर्म की अपेक्षा आने से उन्हें कर्मकृत कहा है।

भगवान के कहे हुए द्रव्य-गुण-पर्याय के स्वरूप का प्रतिपादन करने में समर्थ ऐसे द्रव्यलिंगी मुनि द्रव्य-गुण-पर्यायादि में तो चित्त को लगाते हैं, परन्तु नित्यानंद प्रभु निज कारणपरमात्मा में चित्त को कभी नहीं जोड़ते, इसलिये वे अन्यवश हैं। वे ऐसे विकल्पों के वश होने से अन्यवश हैं। जो द्रव्य-गुण-पर्याय के विकल्प में चित्त को लगाता है, वह विष का प्याला पीता है और जो नित्यानंद निज कारणपरमात्मा में चित्त को लगाता है, वह अनाकुल आनन्द रस के प्याले पीता है।

प्रश्न : अनादि के अज्ञानी जीवों को सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के पहले तो अकेला विकल्प ही होता है न ?

उत्तर : नहीं, अकेला विकल्प नहीं। स्वभाव तरफ ढलते हुए जीव को विकल्प होने पर भी उसी समय आत्मस्वभाव की महिमा का लक्ष भी काम करता है और उस लक्ष के बल पर ही वह जीव आत्मा की ओर आगे बढता है; कहीं विकल्प के बल पर आगे नहीं बढता। राग की ओर का जोर-झुकाव हानिगत होने लगा और स्वभाव की तरफ का जोर-झुकाव

वृद्धिंगत होने लगा, वहाँ (सविकल्प दशा होने पर भी) अकेला राग ही काम नहीं करता; परन्तु राग के अवलम्बन बिना, स्वभाव की तरफ जोरवाला-झुकाववाला एक भाव भी अन्तरंग में वहाँ कार्य करता है और उसी के बल पर आगे बढता-बढता पुरुषार्थ की कोई अपूर्व छलांग लगाकर निर्विकल्प आनन्द का वेदन करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न : विकार चारित्र गुण की पर्याय की योग्यता से होता है तो जबतक विकार होने की योग्यता रहेगी, तबतक विकार होता ही रहेगा और तबतक विकार टालना जीवाधीन नहीं है?

उत्तर : एक-एक समय की स्वतन्त्र योग्यता है- ऐसा निर्णय किस ज्ञान में हुआ ? त्रिकालीस्वभाव की तरफ ढले बिना ज्ञान में एक-एक समय की पर्याय की स्वतन्त्रता का निर्णय नहीं हो सकता; और जहाँ ज्ञान त्रिकालीस्वभाव में ढला, वहाँ स्वभाव की प्रतीति के बल पर पर्याय में से राग-द्वेष होने की योग्यता प्रतिक्षण घटती जाती है। जिसने स्वभाव का निर्णय किया, उसकी पर्याय में लम्बे समय तक राग-द्वेष बने रहें- ऐसी योग्यता ही नहीं रहती, ऐसा ही सम्यक्निर्णय का बल है।

प्रश्न : वर्त्तमान पर्याय में तो अधूरा ज्ञान है, उसमें पूरे ज्ञान स्वभाव का ज्ञान कैसे हो ?

उत्तर : जिसप्रकार आँख छोटी होने पर भी सारे संसार को जान लेती है; उसी प्रकार पर्याय में ज्ञान का विकास अल्प होने पर भी यदि वह ज्ञान स्वसन्मुख हो तो पूर्णज्ञानस्वरूपी आत्मा को स्वसंवेदन से जान लेता है। केवलज्ञान होने से पहले अपूर्णज्ञान में भी स्वसंवेदन प्रत्यक्ष से पूर्णज्ञानस्वरूपी आत्मा का नि:सन्देह निर्णय होता है। जैसे शक्कर की अल्प मात्रा से शक्कर के स्वाद का निर्णय हो जाता है, वैसे ही ज्ञान की अल्पपर्याय को अन्तर्मुख करने पर उसमें पूर्णज्ञानस्वभाव का निर्णय हो जाता है। पूर्णज्ञान होने पर ही पूर्ण आत्मा को जाना जाय- ऐसी बात नहीं है। यदि अपूर्णज्ञान पूर्ण आत्मा को न जान सके, तब तो कभी सम्यग्ज्ञान हो ही नहीं सके; इसलिये अपूर्णज्ञान भी स्वसन्मुख होकर पूर्ण आत्मा को जान लेता है।

प्रश्न : जिनागम में चैतन्यस्वरूप आत्मा का ही ग्रहण करने के लिये कहा; परन्तु मैं चैतन्यस्वरूप आत्मा हूँ- ऐसा लक्ष में लेने पर भेद का विकल्प तो आये बिना रहता ही नहीं ? तो फिर विकल्प रहित आत्मा का ग्रहण कैसे हो ?

उत्तर : प्रथम भूमिका में गुण-गुणी भेद आदि का विकल्प आयेगा अवश्य; किन्तु आत्मा के चैतन्य लक्षण से उसे भिन्न जान कर अभेद चैतन्य की तरफ ढलना। भले ही भेद बीच में आवे, परन्तु मेरे चैतन्य में तो भेद है नहीं-ऐसा जानना। चैतन्य अवस्था का मैं कर्त्ता, चैतन्य में से मैं करूँ, चैतन्य के द्वारा करूँ- इत्यादि षट्कारक-भेद के विचार भले आवे; परन्तु यथार्थपने छहों कारकों में चैतन्यवस्तु एक ही है, उस चैतन्य में कोई भेद नहीं है। इस भाँति चैतन्यस्वभाव की मुख्यता करके और भेद को गौण करके, स्वरूपसन्मुख होकर भावना करने पर ही चैतन्य का ग्रहण होता है; यही सम्यग्दर्शन है- यही मोक्ष का उपाय है।

समाचार दर्शन -

44वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 950 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। शिविर में लगभग 32 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 217 एवं बाल कक्षाओं में 150 विद्यार्थी सम्मिलित। शिविर में 45 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 49,970 घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे।

देवलाली-नासिक (महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनाँक 16 मई से 2 जून, 2010 तक आयोजित 44 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता स्व.पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटानी एवं स्व.कल्पनाबेन विपुलभाई मोटानी की स्मृति में हस्ते कान्तिभाई मोटानी परिवार मुम्बई, स्व.मधुकान्ताबेन रमेशभाई मेहता की स्मृति में हस्ते रमेशभाई मंगलजी मेहता परिवार मुम्बई तथा श्रीमती वीणाबेन जगदीशभाई मोदी परिवार मुम्बई थे।

प्रात:कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के कर्त्ताकर्माधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन बाल ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के अतिरिक्त क्रमश: पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित रमेशचन्दजी दाऊ जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के विभिन्न विषयों पर एक-एक प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये एवं समस्त बच्चों को पारितोषिक वितरित किये गये।

प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, **प्रवचनसार** की कक्षा ब्र.हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, **पंचभाव** की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी, **छहढाला** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, **निमित्तोपादान** की कक्षा श्रीमती उज्ज्वलाबेन शहा एवं **लघुजैनसिद्धांत प्रवेशिका** की कक्षा पण्डित दिनेशभाई शहा ने ली। विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया एवं विदुषी अल्पना भारिल्ल ने भी विभिन्न विषयों की कक्षा ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनंतजी विश्वंभर, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विनीतजी ग्वालियर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, श्रीमती अल्पना भारिल्ल मुम्बई एवं ब्र.वासन्तीबेन देवलाली के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित महावीरजी मांगुलकर कारंजा, पण्डित धनेन्द्रजी ग्वालियर, श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई, श्रीमती लताजी जैन देवलाली एवं कु.मुक्ति जैन का सहयोग प्राप्त हुआ।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी विद्वानों द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 150 बच्चे सम्मिलित हुये।

ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

विमोचन : शिविर में मोक्षमार्गप्रकाशक का सार ग्रन्थ के दोनों भागों का नि:शुल्कवितरण श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई एवं श्री प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर के सहयोग से कराया गया। इस अवसर पर सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में हुई विद्वत् गोष्ठी की डी.वी.डी. का विमोचन भी हुआ।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह ह्न बुधवार, दिनांक 4 जून को दोपहर में आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमनभाई दोशी राजकोट ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सवाईभाई ए. शेठ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री हर्षवर्धनजी जैन औरंगाबाद मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की। पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

समारोह में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा ने ग्रन्थ भेंटकर समस्त शिक्षकों का सम्मान किया। बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के अतिरिक्त उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री आभासजी जैन व श्री सागरजी जैन ने किया। संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं आभार प्रदर्शन पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा ने किया। ●

ऐतिहासिकता से सम्पन्न हुआ हीरक जयन्ती समापन समारोह

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २५ मई को तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह हर्षोल्लासपूर्वक ऐतिहासिकता से मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल हीरक जयंती आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नेमिषभाई शांतिलाल शाह मुम्बई तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जयन्तीभाई दोशी मुम्बई, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री धीरजजी जैन, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत गीत कुमारी परिणति पाटील एवं श्रीमती ज्योति गाला ने प्रस्तुत किया। डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री मुकुन्दभाई खारा ने दिया।

इस प्रसंग पर **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम'** ने अपने विचार व्यक्त करते हुये डॉ. साहब के व्यक्तित्त्व से जुडे अनेक संस्मरण सुनाये तथा उनकी कर्मठता और कर्तव्यनिष्ठा को रेखांकित किया।

श्रीमान् कान्तीभाई मोटाणी ने कहा कि डॉ. भारिल्ल की साहित्य साधना से गुरुदेवश्री बहुत प्रभावित रहते थे। वे डॉ. साहब की कृतियों की सदैव प्रशंसा करते रहते थे। इस बात को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुये उन्होंने धर्म के दश लक्षण पुस्तक के संदर्भ में गुरुदेवश्री के हृदयोद्गारों को सभा के सामने पढकर सुनाया। **बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना** ने डॉ. भारिल्ल के नेतृत्व में संचालित हो रहे महाविद्यालय के महत्व का वर्णन करते हुये उनसे बालिकाओं के लिये भी ऐसा एक विद्यालय खोलने का अनुरोध किया।

मुख्यअतिथि **श्री नेमिषभाई शाह** मुम्बई की ओर से **श्री मुकुन्दभाई खारा** ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की प्रशंसा करते हुये गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना योग में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुये उनके द्वारा चलाये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के प्रत्येक कार्य में तन-मन-धन से सहयोग देने की भावना व्यक्त की। साथ ही देवलाली ट्रस्ट की ओर से डॉ. साहब के सम्मान में पाँच लाख पच्चीस हजार रुपये की राशि भेंट की। ज्ञातव्य है कि इस राशि को डॉ. भारिल्ल ने देवलाली में विक्रेता रहित सत्साहित्य केन्द्र खोलने के लिये समर्पित की।

इस अवसर पर पू. श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली की ओर से श्री नेमिषभाई शाह ने माला पहिनाकर, श्री रमेशभाई मंगलजी ने तिलक लगाकर, श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई ने शॉल ओढाकर एवं श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने श्रीफल भेंटकर डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

इसी प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल के लिये मोना (यू.एस.ए.) से प्राप्त विशेष शुभकामना सन्देश को कु.प्रज्ञा जैन ने एवं श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई की ओर से प्राप्त शुभकामना सन्देश को पण्डित विरागजी शास्त्री ने पढकर सुनाया। इसके अतिरिक्त पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी

भारिल्ल, ब्र.रमाबेन एवं ब्र.वासंतीबेन (देवलाली महिला मण्डल) आदि ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् के लगभग १३५ उपस्थित सदस्यों ने आजीवन तत्त्वप्रचार-प्रसार करने के लिये प्रतिज्ञा-पत्र भरकर डॉ.भारिल्ल को समर्पित किये। ज्ञातव्य है कि स्नातक परिषद के सभी सदस्यों को **निम्नांकित** प्रतिज्ञापत्र भेजा गया है, जिसे उन्होंने अपने हस्ताक्षर करके वापस भेजा है, इस प्रकार अभी तक ३६५ प्रतिज्ञा पत्र भरकर आ चुके हैं और अभी भी आने का सिलसिला चालू है। अनेक अन्य विद्वानों ने भी इस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर डॉ. भारिल्ल को समर्पित किये।

इसके पश्चात् मुमुक्षु मण्डल सीमंधर जिनालय मुम्बई, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन मुम्बई, श्री रतनचंदजी जैन (मंत्री-निसईजी ट्रस्ट, गंजबासौदा), श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मण्डल एवं फैडरेशन नागपुर की ओर से श्री आदिनाथजी नखाते, श्री नरेशजी सिंघई एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल नातेपुते से डॉ.विजयजी शास्त्री, भिण्डर से श्री सुनीलजी वक्तावत, जीतो एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग फाउन्डेशन की ओर से श्री धीरजजी जैन एवं श्री प्रमोदजी जैन दिल्ली, मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन जबलपुर की ओर से डॉ.नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जबलपुर, स्वान्तःसुखाय स्वाध्याय संघ सोलापुर की ओर से डॉ.हुकमचंदजी संगवे आदि ने भी डॉ.भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत श्रीमती रमाबेन ने तिलक व माल्यार्पण करके एवं श्रीमती ज्योत्सनाबेन ने श्रीफल भेंटकर किया।

समारोह का संचालन आयोजन समिति के महामंत्री श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया। आभार प्रदर्शन श्री मुकुन्दभाई खारा ने किया। ●

तृतीय बाल संस्कार शिविर संपन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक ९ से १६ जून तक श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा तृतीय बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

शिविर का उद्घाटन डॉ. अशोकजी जैन इन्दौर ने एवं ध्वजारोहण श्री प्रसन्नकुमारजी जैन जबलपुर ने किया। शिविर में पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित विश्वासजी शास्त्री बडामलहरा, डॉ.ममता जैन बांसवाड़ा एवं श्रीमती रागिनी जैन टीकमगढ का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिला।

इस अवसर पर शिशुवर्ग, बालवर्ग एवं किशोरवर्ग - इस प्रकार तीन वर्गों की कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से टीकमगढ, छतरपुर, दमोह एवं सागर जिले के ३०२ बच्चों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर सिद्धायतन के नवीन-सत्र हेतु प्रवेश परीक्षा भी आयोजित की गई। ज्ञातव्य है कि सिद्धायतन में इस वर्ष कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। कक्षा दसवीं में कपिल जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पांच महाद्वीपों में गुरुदेवश्री की जन्मजयंती

दिनाँक १५ मई को मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका (**MONA**) द्वारा आयोजित गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की १२१ जन्मजयंती अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप तथा एशिया में निवास करने वाले मुमुक्षुओं द्वारा १२१ से भी अधिक टेलिफोन से युगप्रवर्तक युगपुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जय हो - इस जयनाद से मनायी गई।

इस आयोजन में अमेरिका और कनाडा के अनेक नगरों के अतिरिक्त दुबई, लन्दन, नैरोबी, सिडनी, सिंगापुर, अहमदाबाद, अलीगढ, बैंगलोर, चैन्नई, देवलाली, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, सोनगढ आदि नगरों से भी अनेक मुमुक्षुओं ने सहर्ष भाग लिया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित देवेन्द्रजी जैन, श्री राजूभाई कामदार तथा पण्डित शैलेषभाई तलोद ने गुरुदेवश्री के व्यक्तित्त्व और कर्तृत्त्व पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। विदेशों में रहने वाले मुमुक्षुओं के प्रतिनिधियों ने विश्व के सभी मुमुक्षुओं के बीच **ग्लोबल युनिटी** की स्थापना की भावना व्यक्त की।

इस पावन प्रसंग पर विदेशों में रहने वाले मुमुक्षु परिवारों को श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा गुरुदेवश्री के सभी उपलब्ध प्रवचनों की **डी.वी.डी.** का सेट एवं बाबू जुगलकिशोरजी युगल कोटा कृत **चैतन्य की चहल पहल** पुस्तक नि:शुल्क प्रदान करने घोषणा की गई।

गुरुदेवश्री की इस १२१वीं जन्मजयंती की ऑडियो रिकॉर्डिंग www. jainism.us पर उपलब्ध है। विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें -webmaster@jainism.us

स्नातक परिषद् का तृतीय अधिवेशन

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २३ मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का तृतीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल आदि सभी विद्वान मंचासीन थे।

इस अवसर पर मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया। परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी।

इस अवसर पर ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित अध्यात्मजी शास्त्री कोलारस, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री राउत, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, कुमारी मुक्ति जैन मुम्बई ने एवं द्वितीय सत्र में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित रमेशजी शास्त्री जयपुर, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल, पण्डित धरणेन्द्रजी सिंघल ग्वालियर, पण्डित प्रसन्नजी शेटे एवं कुमारी प्रतीति पाटील ने अपने विचार व्यक्त किये। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने की।

फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २६ मई को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का ३१वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुमनभाई दोशी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री वज्रसेनजी दिल्ली मंचासीन थे।

अधिवेशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, श्री अरुणजी वर्धमान, श्री संदीपजी जैन भिण्ड, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि महानुभावों के वक्तव्य का लाभ मिला।

अधिवेशन का संचालन महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

फैडरेशन ने आगामी वर्ष को **श्रावकाचार संस्कार वर्ष** के रूप में मनाने का निर्णय लिया/घोषणा की। फैडरेशन द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर पुरस्कारों की घोषणा की जाती है। इसी क्रम में **वर्षभर विशिष्ट कार्य हेतु श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार** अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर, उदयपुर जिला एवं कोटा संभाग को प्राप्त हुआ।

वर्षभर श्रेष्ठ कार्य हेतु विशिष्ट कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी पुरस्कार पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, श्री सुरेशचंदजी जैन भिण्ड, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड एवं श्री नीरजजी जैन दिलशाद गार्डन दिल्ली को प्रदान किया गया।

विशिष्ट कार्य हेतु **श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार** अ.भा.युवा फैडरेशन शाखा कोल्हापुर, नागपुर, अकोला, विश्वासनगर दिल्ली, न्यू उस्मानपुरा दिल्ली, छिन्दवाड़ा, बैंगलोर, मकरोनिया सागर, इन्दौर, जबलपुर, भोपाल, गौरझामर, जयपुर महानगर, खनियांधाना, बहादुरगढ, हिंगोली, ललितपुर, भिण्डर, लूणदा, खैरागढ, बीना, कोलारस एवं टीकमगढ शाखा को दिये गये।

वेदी शुद्धि का भव्य आयोजन

जयपुर : यहाँ घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर दीवान भधीचन्दजी में दिनांक 22 एवं 23 मई को रथयात्रा एवं वेदी शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मंदिर कमेठी के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्रजी दीवान ने बताया कि दिनांक 22 मई को प्रात: ध्वजारोहण श्री विमलेशजी (मारसन्स) परिवार आगरावालों के करकमलों से हुआ। तत्पश्चात् घटयात्रा पूर्वक 108 कलशों से वेदी की शुद्धि की गई, दोपहर में यागमण्डल विधान एवं सायंकाल प्रवचनोपरान्त ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

23 मई को प्रात: जिनवाणी रथयात्रा के उपरांत शुभ मुहूर्त में स्वर्ण कार्य की गई 13 प्राचीन वेदियों पर शताधिक जिन प्रतिमायें विराजमान की गईं। आयोजन में दोनों दिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

इस अवसर पर मंदिर परिसर में श्री आदिनाथ होम्यो चिकित्सालय (नि:शुल्क) का उद्घाटन श्रीमती सूरजदेवी एवं उनके सुपुत्र श्री प्रदीपकुमारजी पाटनी परिवार के करकमलों से हुआ।

वेदि शुद्धि एवं विधानादि के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। **– राजकुमार साह**

नवीन प्रवेश प्रारंभ

पत्राचार द्वारा जैनदर्शन के विधिवत् अध्ययन हेतु श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ की स्थापना की गयी है। इसके चतुर्थ सत्र-२०१० हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र जयपुर कार्यालय में पत्र लिखकर मंगा सकते हैं। आवेदन-पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई, 2010 तक है। इसके द्वारा निम्नानुसार पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

1. द्विवर्षीय विशारद परीक्षा

यह पाठ्यक्रम श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा उपाध्याय वर्ग के लिए निश्चित पाठ्यक्रम के अनुरूप दो वर्ष का है जिसमें छः-छः महीने सेमेस्टर के अनुसार पाठ्यक्रम प्रतिवर्ष दो भागों में विभाजित हैं। जिसकी परीक्षा प्रतिवर्ष दिसम्बर माह व जून में होगी। चूंकि छात्र का नामांकन दो वर्ष के लिए होगा; अतः परीक्षार्थी को दोनों वर्षों की फीस 200/- रु. एक साथ भेजनी हैं। पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु न्यूनतम आयु - 15 वर्ष एवं शैक्षणिक योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण है।

पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु निर्धारित ग्रन्थ (प्रश्न पत्र योजना सहित) निम्नानुसार है -

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ) :-

प्रथम सेमेस्टर : प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1
द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक) + सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय सेमेस्टर : प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2
द्वितीय प्रश्नपत्र:वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ) :-

प्रथम सेमेस्टर : प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

द्वितीय सेमेस्टर : प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
द्वितीय प्रश्नपत्र : धर्म के दशलक्षण (70 अंक)+भक्तामर स्तोत्र (30 अंक)

2. त्रिवर्षीय सिद्धान्त विशारद परीक्षा

यह पाठ्यक्रम श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा शास्त्री वर्ग के लिए निश्चित पाठ्यक्रम के अनुरूप तीन वर्ष का है। छः-छः महीने के सेमेस्टर आधार से पाठ्यक्रम को प्रतिवर्ष दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें प्रवेश हेतु अभ्यार्थी का द्विवर्षीय विशारद उत्तीर्ण होना अनिवार्य है तथा इससे नवीन नामांकन की आवश्यकता नहीं होगी; चूंकि इस पाठ्यक्रम में प्रवेश तीन वर्षों के लिए है; अतः इसकी फीस 300/- रुपये एक साथ जमा करानी है। पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु निर्धारित ग्रन्थ (प्रश्न पत्र योजना सहित) निम्नानुसार है -

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : गुणस्थान विवेचन
द्वितीय पत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक)+सामान्य श्रावकाचार(30 अंक)

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : रत्नकरण्डश्रावकाचार (केवल श्लोकार्थ) 150 श्लोक

द्वितीय पत्र : रामकहानी (70 अंक) +आप कुछ भी कहो (30 अंक)।

द्वितीय वर्ष (प्रथम सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : समयसार - पूर्व रंग से जीवाजीवाधिकार तक
(समयसार अनुशीलन भाग-1)
द्वितीय पत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड (प्रथम अध्याय)

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक (एक से चार अधिकार)
द्वितीय पत्र : परम भाव प्रकाशक नयचक्र (निश्चय व्यवहार प्रकरण)
तृतीय पत्र : हरिवंशकथा (70 अंक)+भ.महावीर और सर्वोदय तीर्थ (30 अंक)

तृतीय वर्ष (प्रथम सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : समयसार ह्न कर्त्ताकर्मअधिकार
(समयसार अनुशीलन भाग-2)
द्वितीय पत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा 70 से 215 तक
(गाथा 97 से 112 तक की गाथा छोड़कर)

तृतीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) : प्रथम पत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक (छह से नौ अधिकार)
द्वितीय पत्र : परमभाव प्रकाशक नयचक्र (उत्तरार्द्ध)
तृतीय पत्र : शलाका पुरुष (पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध)

भगवान बाहुबली की प्रतिमा का भव्य स्वागत

बडोदरा (गुज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ द्वारा प्रस्तावित जंबूद्वीप संकुल में स्थापित होने वाली भगवान बाहुबली की ४१ फीट ऊँची एवं २०० टन वजन वाली प्रतिमा बैंगलोर के पास से बनकर १४० पहियों वाले विशेष ट्रेलर द्वारा सोनगढ जा रही है। रास्ते में पूना (महा.) के अतिरिक्त बड़ोदरा (गुज.) नगर में दिनांक ६ जून को इस अतिभव्य प्रतिमा का भव्य स्वागत समस्त जैन बन्धुओं द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सैंकड़ों साधर्मी भाई-बहनों ने समारोह स्थल पर वेदी में प्रतिमा विराजमान कर देव-शास्त्र-गुरु एवं भगवान बाहुबली की सामूहिक पूजन की। पूजन के पश्चात् मंगलाष्टक के पवित्र उच्चारण के साथ हजारों जैन-अजैन लोगों ने ४१ फीट उन्नत भगवान बाहुबली मूर्ति का स्वागत किया। इस अवसर पर श्री दीपकभाई, श्री जीगेशभाई, श्रीमती दीप्तीबेन, कु.भूमि, श्रीमती कल्पना देसाई बडोदरा ने भक्ति के माध्यम से लोगों में उल्लास भर दिया।

इस कार्यक्रम में बडोदरा ही नहीं अपितु मुम्बई, अहमदाबाद, राजकोट, दाहोद, सुरेन्द्रनगर, हिम्मतनगर, तलोद, बोरसद आदि अनेक नगरों से मुमुक्षु भाई-बहन पधारे।

इस अवसर पर सोनगढ स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री राजूभाई कामदार, दि.जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजयजी जैन (लुहाड़िया), चैतन्यधाम के अध्यक्ष श्री अमृतभाई मेहता, श्री गुजराती दि.जैन महासंघ मध्य गुजरात जोन के गवर्नर श्री महेशभाई शाह, बडोदरा के विधायक श्री योगेशजी पटेल, विधायक श्री भूपेन्द्रजी लाखावाला, विपक्ष के नेता श्री चिरागजी जवेरी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री अजितजी जैन के नेतृत्व में बडोदरा के सभी दि.जैन मंदिर, युवक मण्डल, महिला मण्डल एवं अन्य संस्थाओं ने मिलकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 17 से 30 मई तक चले ग्रीष्मकालीन शिविर का पुरस्कार वितरण समारोह दिनाँक 1 जून को रखा गया।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर, श्री सुशीलजी गोदीका जयपुर, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, डॉ.बी.सी.जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन महानगर शाखा द्वारा आयोजित इस जैन नैतिक संस्कार शिविर में लगभग 50 बच्चों ने धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। श्री रविजी सेठी द्वारा बच्चों को पुरस्कृत किया।

इस शिविर में सुश्री नेहा अजमेरा, श्रीमती कमलेश बाकलीवाल, श्रीमती आरती जैन, श्रीमती नेहा जैन, पण्डित विशेषजी शास्त्री, पण्डित साकेतजी शास्त्री, कु.परिणति पाटील, कु.प्रतीति पाटील आदि अध्यापकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस कार्यक्रम का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

पुरस्कार वितरण समारोह के पूर्व युवा फैडरेशन द्वारा सामूहिक पूजन हुई तथा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन का लाभ मिला।

ग्रीष्मकाल के अवसर पर मई एवं जून माह में इन्दौर, सिलवानी, भिण्ड, अमरमऊ, नागपुर, जयपुर, नौगांव आदि अनेक स्थानों पर ग्रुप एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिनके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रवेश फार्म आमंत्रित

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें जुलाई-2010 के अंतिम सप्ताह में होनेवाली हैं। संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली प्रवेश फार्म डाक से भिजवाये जा चुके हैं। कदाचित् डाक की गड़बड़ी से जिन्हें नहीं मिल सकें हो, वे कृपया तत्काल परीक्षा बोर्ड कार्यालय को पोस्टकार्ड लिखकर मंगा लेवें।

– ओ.पी. आचार्य, प्रबंधक

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण एवं स्वीकृति शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास बहुत स्थानों से आमंत्रण-पत्र आ चुके हैं। जिन्होंने अभी तक अपने आमंत्रण न भेजे हों वे अपना आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र एवं स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, जिन विद्वानों ने अभी तक भी अपनी स्वीकृति नहीं भेजी है, उनसे निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजने का कष्ट करें। **– मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**